

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ ग्यारह

प्रकाशितवाक्य की पहली विपत्ति में अबूबकर के भविष्यवाणी संबंधी महत्व का अनावरण

Jeff Pippenger

2024-03-02

पहली विपत्ति के भविष्यवाणी के इतिहास में, मुहम्मद के बाद नेतृत्व करने वाले अबू बक्र अब्दुल्लाह इब्न अबी क्रहाफ़ा थे, जो मुहम्मद के ससुर थे। हम उन्हें अबूबकर कहेंगे। पहले चार पदों में उनका और मुहम्मद दोनों का उल्लेख है। अबूबकर, मुहम्मद के बाद पहले इस्लामी शासक थे, और इतिहास यह दर्ज करता है कि उन्होंने अपने सैनिकों को जो आदेश दिया था, वह प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ के पद चार में दर्शाया गया है। यह आदेश उस मुहर लगाने की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है जो तीसरी विपत्ति के आगमन पर शुरू हुई—जो सातवीं तुरही भी थी, और साथ ही तीसरे स्वर्गदूत का आगमन भी।

और पाँचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी, और मैंने देखा कि स्वर्ग से एक तारा पृथ्वी पर गिर पड़ा; और उसे अथाह कुंड की कुंजी दी गई। और उसने अथाह कुंड को खोला; और उस कुंड से धुआँ निकला, जैसे किसी बड़े भट्टे का धुआँ; और उस कुंड के धुएँ के कारण सूर्य और वायु अंधकारमय हो गए। और उस धुएँ में से टिड्डियाँ पृथ्वी पर निकलीं; और उन्हें ऐसी सामर्थ दी गई जैसी पृथ्वी के बिच्छुओं को सामर्थ होती है। और उन्हें यह आज्ञा दी गई कि वे न तो पृथ्वी की घास को, न किसी हरी वस्तु को, न किसी पेड़ को हानि पहुँचाएँ; परन्तु केवल उन मनुष्यों को, जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। प्रकाशितवाक्य 9:1-4.

स्वर्ग से गिरा "तारा" मोहम्मद था, जिसने वर्ष 606 में अपना धर्म-प्रचार आरंभ किया। मोहम्मद को एक "कुंजी" दी गई जो "अतल गह्वर" को "खोलने" वाली थी, जिससे "धुआँ" "सूरज और हवा" को अंधेरा कर दे, और "टिड्डियाँ" निकलीं जिन्हें "बिच्छुओं" की शक्ति जैसी "शक्ति" दी गई। वह कुंजी एक सैन्य युद्ध था जिसने रोमन साम्राज्य की सैन्य शक्ति में कमजोरी पैदा की, और इस प्रकार इस्लाम के युद्ध के उभार को संभव बनाया। अतल गह्वर अरब का प्रतीक है, जो इस्लाम का जन्मस्थान है, और धुआँ इस्लाम के झूठे धर्म का प्रतिनिधित्व करता था, जो पृथ्वी भर में फैलना था और उसी भौगोलिक क्षेत्र पर अधिकार करना था, जिस पर टिड्डियों के वे झुंड उमड़ते हैं जो उत्तर अफ्रीका, दक्षिणी यूरोप और अरब में छा जाते हैं। टिड्डियाँ इस्लाम का प्रतीक हैं, और शक्ति भविष्यवाणी की दृष्टि से सैन्य शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। उनकी शक्ति बिच्छुओं जैसी होनी थी, जो अचानक वार करते हैं। यूरियाह स्मिथ कहते हैं:

स्वर्ग से एक तारा पृथ्वी पर गिरा; और उसे अतल गह्वर की कुंजी दी गई।

जब फारसी सम्राट अपनी कला और शक्ति के चमत्कारों पर विचार कर रहा था, तभी उसे मक्का के एक अल्पज्ञात नागरिक का एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें उसे ईश्वर के दूत के रूप में मोहम्मद को स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उसने उस आमंत्रण को अस्वीकार कर दिया और पत्र को फाड़ दिया। 'ऐसा ही होगा,' अरब नबी ने उद्धोष किया, 'ईश्वर राज्य को इसी प्रकार चीर देगा और खुसरो की प्रार्थना को अस्वीकार कर देगा।' पूर्व के इन दो साम्राज्यों की कगार पर स्थित होकर, मोहम्मद ने परस्पर विनाश की प्रगति को गुप्त आनंद से देखा; और फारसी विजयों के बीच ही उन्होंने साहसपूर्वक यह भविष्यवाणी की कि, अधिक वर्ष बीतने से पहले, विजय फिर से रोमनों के पक्ष में लौट आएगी। 'जब यह भविष्यवाणी कही गई बताई जाती है, उस समय इसकी पूर्ति से अधिक दूर कोई भी भविष्यवाणी नहीं हो सकती थी, क्योंकि हेराक्लियस के पहले बारह वर्षों ने साम्राज्य के आसन्न विघटन की घोषणा कर दी थी.' ..

'खुसरो ने एशिया और अफ्रीका [में] रोमन अधिकार-क्षेत्रों को वश में कर लिया। और 'रोमन साम्राज्य' उस समय 'कॉन्स्टेंटिनोपल की दीवारों तक सिमट कर रह गया था; उसके साथ केवल ग्रीस, इटली और अफ्रीका के बचे-खुचे हिस्से, और एशियाई तट पर टायर से ट्रेबिज़ोंड तक के कुछ समुद्री नगर बचे थे। छह वर्षों के अनुभव ने

अंततः फारसी सम्राट को कॉन्स्टेंटिनोपल की विजय का इरादा त्याग देने और रोमन साम्राज्य की फिरौती के वार्षिक खिराज को निर्धारित करने के लिए राजी कर दिया—सोने के एक हज़ार टैलेंट, चाँदी के एक हज़ार टैलेंट, रेशम के एक हज़ार वस्त्र, एक हज़ार घोड़े, और एक हज़ार कन्याएँ। हेराक्लियस ने इन अपमानजनक शर्तों को मान लिया। परंतु पूर्व के दरिद्र प्रदेशों से वे धन-संपत्तियाँ इकट्ठा करने के लिए जो समय और अवकाश उसे मिला, उसे उसने परिश्रमपूर्वक एक साहसी और हताशापूर्ण आक्रमण की तैयारी में लगा दिया।"

फ़ारस के राजा ने उस गुमनाम सारासेन का तिरस्कार किया और मक्का के कथित पैगंबर के संदेश का उपहास उड़ाया। यहाँ तक कि रोम साम्राज्य के पतन से भी न तो मोहम्मदी मत के लिए कोई मार्ग खुलता, न ही एक प्रपंच का प्रचार करने वाले सारासेनी सशस्त्र प्रचारकों के विस्तार के लिए, यद्यपि फ़ारसियों का सम्राट और अवारों का खागन (अत्तीला का उत्तराधिकारी) कैसरों के राज्यों के अवशेषों को आपस में बाँट चुके थे। खुसरो स्वयं भी धराशायी हो गया। फ़ारसी और रोमन राजतंत्रों ने एक-दूसरे की शक्ति को क्षीण कर दिया। और झूठे पैगंबर के हाथ में तलवार रखे जाने से पहले ही, वह उन लोगों के हाथों से छीन ली गई थी जो उसके अभियान को रोक देते और उसकी शक्ति को कुचल देते।

'स्क़िपियो और हैनिबल के दिनों से, साम्राज्य के उद्धार के लिए हेराक्लियस ने जो कार्य पूरा किया, उससे अधिक साहसी उपक्रम कभी नहीं किया गया। उसने काला सागर और अर्मेनिया के पर्वतों से होकर अपना जोखिमभरा मार्ग तय किया, फारस के हृदय तक जा पहुँचा, और महान राजा की सेनाओं को अपने लहलुहान देश की रक्षा के लिए वापस बुला दिया।'

निनेवे की लड़ाई में, जो भोर से ग्यारहवें घंटे तक भीषण रूप से लड़ी गई, फारसियों से, टूटे या फटे हुए ध्वजों को छोड़कर, अट्टाईस ध्वज छीन लिए गए; उनकी सेना का अधिकांश भाग टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया, और विजेताओं ने अपनी हानि छिपाते हुए रात उसी मैदान में बिताई। असीरिया के नगर और महल पहली बार रोमनों के लिए खोल दिए गए।

रोमन सम्राट उन विजयों से सुदृढ़ नहीं हुआ जो उसने प्राप्त कीं; और उसी समय, तथा उन्हीं साधनों से, अरब से आने वाले सरासेनों की असंख्य भीड़ के लिए भी मार्ग तैयार हो गया, जो उसी प्रदेश से आने वाली टिड्डियों की तरह, अपने मार्ग में अंधकारमय और भ्रामक मोहम्मदी मत का प्रसार करते हुए, शीघ्र ही फ़ारसी और रोमन दोनों साम्राज्यों पर छा गए।

"इस तथ्य का इससे अधिक संपूर्ण उदाहरण चाहा ही नहीं जा सकता, जितना गिबन के उस अध्याय के समापन शब्दों में मिलता है, जिससे उपर्युक्त उद्धरण लिए गए हैं। 'यद्यपि हेराक्लियस के ध्वज के नीचे एक विजयी सेना खड़ी हो गई थी, इस अप्राकृतिक प्रयत्न ने उनकी शक्ति का अभ्यास कराने की अपेक्षा उसे मानो क्षीण ही कर दिया था। जब सम्राट कॉन्स्टैन्टिनोपल या यरूशलेम में विजय मना रहा था, उसी समय सीरिया की सरहद पर स्थित एक गुमनाम नगर को सरासेनों ने लूट लिया, और उसकी सहायता को आगे बढ़ रही कुछ टुकड़ियों को उन्होंने काट कर रख दिया,— यह एक साधारण और तुच्छ घटना होती, यदि वह एक महान क्रांति की प्रस्तावना न होती। ये लुटेरे मुहम्मद के प्रेरित थे; उनकी उन्मत्त वीरता मरुस्थल से उभर आई थी; और अपने शासन के अंतिम आठ वर्षों में, हेराक्लियस ने वही प्रांत अरबों के हाथों गँवा दिए, जिन्हें उसने फारसियों से छुड़ाया था।"

'छल और उन्माद की आत्मा, जिसका निवास स्वर्ग में नहीं है,' पृथ्वी पर छोड़ दी गई। अथाह कुंड को खोलने के लिए उसे बस एक कुंजी चाहिए थी, और वह कुंजी खुसरो का पतन थी। उसने मक्का के एक गुमनाम नागरिक का पत्र तिरस्कारपूर्वक फाड़ दिया था। पर जब वह अपनी 'महिमा की दहक' से उतरकर उस 'अंधकार के बुर्ज' में जा समाया, जिसे कोई आँख भेद नहीं सकती थी, तो खुसरो का नाम अचानक मुहम्मद के नाम के आगे विस्मृति में विलीन हो जाने वाला था; और अर्धचंद्र मानो अपने उदय के लिए तारे के पतन की प्रतीक्षा भर कर रहा था। पूर्ण पराजय और साम्राज्य-हानि के बाद खुसरो की वर्ष 628 में हत्या कर दी गई; और वर्ष 629 'अरब की विजय' और 'रोमी साम्राज्य के विरुद्ध मुसलमानों के प्रथम युद्ध' से चिह्नित है। 'और पाँचवें स्वर्गदूत ने नरसिंगा फूँका, और मैंने एक तारा स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरते देखा; और उसे अथाह कुंड की कुंजी दी गई। और

उसने उस अथाह कुंड को खोला.' वह पृथ्वी पर गिर पड़ा. जब रोमी साम्राज्य की शक्ति चुक गई, और पूरब का महान राजा अपने अंधकार के बुर्ज में मृत पड़ा था, तब सीरिया की सीमा पर एक गुमनाम नगर की लूट 'एक महान क्रांति की भूमिका' थी. 'लुटेरे मुहम्मद के प्रेरित थे, और उनका उन्मादी शौर्य रेगिस्तान से उभर पड़ा.'

"अथाह कुण्ड.—इस शब्द का अर्थ ग्रीक, जिसका अर्थ 'गहरा, अथाह, अगाध' बताया गया है, से जाना जा सकता है, और यह किसी भी उजड़े, वीरान और अकृषित स्थान का संकेत कर सकता है। यह पृथ्वी की मूल अराजक अवस्था पर भी लागू होता है। Gen.1:2. इस प्रसंग में यह अरब के रेगिस्तान के अज्ञात उजाड़ विस्तारों की ओर उपयुक्त रूप से संकेत कर सकता है, जिसकी सीमाओं से टिड्डियों के झुंडों की तरह सरासेनों की भीड़ निकल पड़ी। और फारसी राजा Chosroes का पतन उस अथाह कुण्ड के खुलने के रूप में ठीक ही निरूपित किया जा सकता है, क्योंकि इससे मोहम्मद के अनुयायियों के लिए अपने अपरिचित देश से निकलकर आग और तलवार के साथ अपने भ्रामक सिद्धांतों का प्रसार करने का मार्ग तैयार हो गया, यहाँ तक कि उन्होंने अपना अंधकार पूरे पूर्वी साम्राज्य पर फैला दिया था।" Uriah Smith, Daniel and Revelation, 495-498.

पहली विपत्ति, जो कि पाँचवीं तुरही है, इस्लाम के रोम के विरुद्ध युद्ध की शुरुआत को चिन्हित करती है, और यह रोम और फ़ारस के बीच हुए उस युद्ध की भी पहचान करती है जिसमें रोम विजयी तो रहा, पर ऐसा करते-करते उसने अपनी सैन्य शक्ति इस हद तक क्षीण कर दी कि वह इस्लामी सत्ता के उदय को रोक नहीं सका। पहली और दूसरी विपत्ति की भविष्यवाणी-संबंधी विशेषताएँ, तीसरी विपत्ति की भविष्यवाणी-संबंधी विशेषताओं को चिन्हित करती हैं, और पहली दो विपत्तियों को तीसरी विपत्ति के इतिहास के प्रतीकों के रूप में पहचानना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह इतिहास एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी की अवधि का प्रतिनिधित्व करता है, जो 11 सितम्बर, 2001 को आरम्भ हुआ। पहले तीन पदों में मोहम्मद द्वारा दर्शाए गए भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास के बाद, चौथा पद मोहम्मद के बाद के पहले नेता अबू बकर का परिचय कराता है।

और उन्हें यह आज्ञा दी गई कि वे न पृथ्वी की घास को, न किसी हरियाली को, न किसी वृक्ष को हानि पहुँचाएँ; परन्तु केवल उन मनुष्यों को हानि पहुँचाएँ, जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। प्रकाशितवाक्य 9:4.

अबूबकर के आदेश में इस्लामी योद्धाओं को उस समय रोमन क्षेत्रों में मौजूद दो प्रकार के उपासकों के बीच भेद करने का निर्देश दिया गया था। एक वर्ग कैथोलिकों का था, जिनके कुछ धार्मिक संघ सिर के पीछे का भाग मुंडवाते थे (मुंडन), और रविवार की उपासना का पालन करते थे। दूसरा वर्ग सातवें दिन के सब्बाथ का पालन करने वालों का था, और सब्बाथ ईश्वर की मुहर है।

मोहम्मद की मृत्यु के बाद, ईस्वी सन् 632 में कमान में उनके उत्तराधिकारी अबू बक्र बने, जिन्होंने, जैसे ही उन्होंने अपना अधिकार और शासन भली-भाँति स्थापित कर लिया, अरबी जनजातियों को एक परिपत्र प्रेषित किया, जिसमें से निम्नलिखित अंश है:-

'जब तुम प्रभु के युद्ध लड़ो, तो पुरुषों की भाँति डटकर मुकाबला करो, पीठ न फेरो; पर अपनी विजय को स्त्रियों और बच्चों के रक्त से कलंकित न होने दो। किसी खजूर के पेड़ को न नष्ट करो, और न किसी अनाज के खेतों को जलाओ। किसी फलदार वृक्ष को मत काटो, और न ही पशुधन को कोई हानि पहुँचाओ, केवल उतने को जिन्हें खाने के लिए मारो। जब तुम कोई वाचा या समझौता करो, तो उस पर अडिग रहो, और अपने वचन के अनुसार सच्चे बनो। और जब तुम आगे बढ़ो, तो तुम्हें कुछ धार्मिक लोग मिलेंगे जो मठों में एकांतवास करते हैं और उसी प्रकार ईश्वर की सेवा करने का संकल्प रखते हैं; उन्हें छोड़ दो, न उन्हें मारो और न उनके मठों को नष्ट करो। और तुम्हें दूसरे प्रकार के लोग मिलेंगे जो शैतान के सभागृह से सम्बन्ध रखते हैं, जिनके सिर मुंडे हुए हैं; यह सुनिश्चित करो कि उनकी खोपड़ियाँ चीर दो, और उन्हें कोई रियायत न दो, जब तक कि वे या तो मुसलमान न बन जाएँ या कर न अदा करें।'

यह न तो भविष्यवाणी में कहा गया है और न इतिहास में कि अधिक मानवीय निर्देशों का उतनी ही निष्ठा से पालन किया गया जितना कि उस क्रूर फरमान का; परंतु उन्हें ऐसा ही आदेश दिया गया था। और उपर्युक्त वे ही

एकमात्र निर्देश हैं जिन्हें गिबन ने अभिलेखित किया है, जो अबूबेकर ने उन सरदारों को दिए थे जिनका कर्तव्य समस्त सारासेनी सेनाओं को आदेश जारी करना था। वे आदेश भविष्यवाणी जितने ही विवेकपूर्ण हैं, मानो खलीफ़ा स्वयं नश्वर मनुष्य की आज्ञा से बढ़कर किसी उच्चतर आदेश की जान-बूझकर और प्रत्यक्ष आज्ञाकारिता में कार्य कर रहा हो; और ठीक उसी समय, जब वह यीशु के धर्म के विरुद्ध लड़ने और उसके स्थान पर मुहम्मदवाद का प्रसार करने के लिए निकल रहा था, उसने वही शब्द दोहराए जिनके बारे में यीशु मसीह के प्रकाशन में पहले से कहा गया था कि वह कहेगा।

उनके ललाटों पर परमेश्वर की मुहर.—अध्याय 7:1-3 पर टिप्पणियों में हमने दिखाया है कि परमेश्वर की मुहर चौथी आज्ञा का विश्रामदिन है; और इतिहास इस तथ्य पर मौन नहीं है कि इस वर्तमान युग भर में सच्चे विश्रामदिन के पालनकर्ता रहे हैं। परंतु यहाँ बहुतों के मन में यह प्रश्न उठा है कि इस समय जिनके ललाटों पर परमेश्वर की मुहर थी, और जो इस कारण मोहम्मदी उत्पीड़न से मुक्त रहे, वे लोग कौन थे? पाठक उस तथ्य को स्मरण रखें, जिसका पहले ही संकेत किया गया है, कि इस समूचे युग में ऐसे लोग रहे हैं जिनके ललाटों पर परमेश्वर की मुहर रही है, अर्थात् सच्चे विश्रामदिन के समझदार पालनकर्ता रहे हैं; और वे यह भी विचार करें कि भविष्यवाणी का कथन यह है कि इस विध्वंसकारी तुर्की शक्ति के आक्रमण उनके विरुद्ध नहीं, बल्कि एक अन्य वर्ग के विरुद्ध निर्देशित हैं। इस प्रकार विषय से सारी कठिनाई दूर हो जाती है; क्योंकि वास्तविकता में भविष्यवाणी का कथन बस इतना ही है। पाठ में प्रत्यक्ष रूप से केवल एक ही वर्ग सामने लाया गया है; अर्थात् वे जिनके ललाटों पर परमेश्वर की मुहर नहीं है; और जिनके पास परमेश्वर की मुहर है उनकी रक्षा का उल्लेख केवल संकेत रूप में आता है। अतएव, इतिहास से हम यह नहीं पाते कि इनमें से कोई भी उन विपत्तियों में सम्मिलित हुआ हो जो सारासेनों ने अपने घृणा-लक्ष्यों पर डालीं। उन्हें मनुष्यों के एक अन्य वर्ग के विरुद्ध नियुक्त किया गया था। और इस वर्ग पर आने वाले विनाश की तुलना अन्य मनुष्यों की रक्षा से नहीं, बल्कि केवल पृथ्वी के फलों और हरियाली की रक्षा से की गई है; अर्थात्, घास, वृक्षों, या किसी भी हरी वस्तु को हानि न पहुँचाओ, पर केवल मनुष्यों के एक निश्चित वर्ग को। और इसकी पूर्ति में, हम आक्रमणकारियों की एक ऐसी सेना का विचित्र दृश्य देखते हैं जो उन वस्तुओं को बर्खास्त देती है जिन्हें ऐसी सेनाएँ प्रायः नष्ट करती हैं, अर्थात् प्रकृति का रूप-रंग और उसकी उपज; और, उन लोगों को हानि पहुँचाने की उन्हें दी गई अनुमति के अनुरूप जिनके ललाटों पर परमेश्वर की मुहर नहीं थी, वे मुंडे हुए मस्तकों वाले एक धार्मिक वर्ग की खोपड़ियाँ चीरते थे, जो शैतान की सभा से संबंध रखते थे।

"ये निःसंदेह भिक्षुओं का एक वर्ग, या रोमन कैथोलिक चर्च का कोई अन्य विभाग थे। इन्हीं के विरुद्ध मुसलमानों के शस्त्र उठे। और हमें प्रतीत होता है कि, यदि इसे योजना न भी कहें, तो भी उन्हें इस प्रकार वर्णित करने में कि उनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं थी, एक विशेष उपयुक्तता है; क्योंकि वही चर्च है जिसने सच्चे विश्रामदिन को उखाड़कर उसकी जगह एक नकली स्थापित करके, परमेश्वर की व्यवस्था को उसकी मुहर से वंचित कर दिया है। और न तो भविष्यवाणी से और न ही इतिहास से हम यह समझते हैं कि जिन व्यक्तियों को अबू बक्र ने अपने अनुयायियों को हानि न पहुँचाने का आदेश दिया था, वे परमेश्वर की मुहर के धारक थे, या अनिवार्य रूप से परमेश्वर की प्रजा ठहरते थे। वे कौन थे, और किस कारण उन्हें बर्खास्त किया गया, इस बारे में गिबन की अल्प गवाही हमें सूचित नहीं करती, और यह जानने का हमारे पास अन्य कोई उपाय नहीं है; परन्तु हमें विश्वास करने के पूरे कारण हैं कि जिनके पास परमेश्वर की मुहर थी, उनमें से किसी को भी कष्ट नहीं दिया गया, जबकि दूसरी श्रेणी, जिनके पास यह स्पष्टतः नहीं थी, तलवार के हवाले कर दी गई; और इस प्रकार भविष्यवाणी की शर्तें पूर्णतः पूरी होती हैं।" Uriah Smith, Daniel and Revelation, 500-502.

Abubakar ने Mohammed की मृत्यु के बाद उसके अनुयायियों को एक खिलाफत में संगठित कर दिया, इसलिए यद्यपि वे दो भिन्न ऐतिहासिक व्यक्तियाँ हैं, दोनों को साथ लेकर देखें तो वे पहली विपत्ति में इस्लाम की गवाही की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करते हैं, और पहली विपत्ति के इतिहास को चिह्नित करने वाला ऐतिहासिक व्यक्ति Mohammed है।

दूसरी विपत्ति के इतिहास के आरंभ में, 1453 में मोहम्मद द्वितीय ने कॉन्स्टेंटिनोपल पर विजय प्राप्त की। 1449 में, इस्लाम का प्रतिनिधित्व करने वाले चार स्वर्गदूत मुक्त किए गए। पहली विपत्ति की शुरुआत और समाप्ति क्रमशः मोहम्मद प्रथम और द्वितीय द्वारा चिह्नित हैं। भविष्यवाणी की दृष्टि से, पहली विपत्ति के इतिहास की शुरुआत और समाप्ति अल्फा और ओमेगा की छाप लिए हुए हैं।

दूसरी विपत्ति की शुरुआत में चार स्वर्गदूतों के विषय में एक समय-संबंधी भविष्यवाणी सम्मिलित है, जो इस्लाम का प्रतिनिधित्व करते हैं; वे तब मुक्त किए गए, और फिर 11 अगस्त, 1840 को रोके गए। उस समय से 22 अक्टूबर, 1844 तक एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी दर्शाई जाती है। दूसरी विपत्ति की शुरुआत इस्लाम के मुक्त किए जाने को चिह्नित करती है, और उसका अंत इस्लाम के रोके जाने को चिह्नित करता है। पहली और दूसरी दोनों विपत्तियों में सटीक भविष्यसूचक चिह्न हैं जो उनकी शुरुआत को उनके अंत से जोड़ते हैं।

पहली दो विपत्तियों को 'पंक्ति पर पंक्ति' एक-दूसरे पर रखा जाना है, ताकि तीसरी विपत्ति की पहचान हो सके। इस्लाम के पहले दो गवाह जिन भविष्यसूचक विशेषताओं की पहचान कराते हैं, उनमें से एक यह है कि वे एक विशिष्ट समयावधि का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका आरंभ और अंत अल्फा और ओमेगा के चिह्न से चिह्नित है। उनके पास एक द्वितीयक चिह्न भी है, क्योंकि पहली विपत्ति की शुरुआत परमेश्वर की प्रजा की मुहरबंदी की पहचान कराती है, और दूसरी विपत्ति का अंत भी परमेश्वर की प्रजा की मुहरबंदी की पहचान कराता है।

तीसरी हाय तब आई जब इस्लाम ने प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह के पृथ्वी से निकलने वाले पशु पर अचानक और अप्रत्याशित आक्रमण किया, और इस प्रकार मुद्रांकन की अवधि आरम्भ हुई। एक लाख चवालीस हजार का मुद्रांकन शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर समाप्त होता है, और उस धर्मत्याग के प्रत्युत्तर में राष्ट्रीय धर्मत्याग के बाद राष्ट्रीय विनाश आता है। जैसा कि मूर्तिपूजक रोम और पापल रोम के साथ प्रतिरूपित है, राष्ट्रीय विनाश परमेश्वर के नरसिंगों के न्यायों द्वारा सम्पन्न होता है। तीन हाय भी नरसिंगे हैं। तीसरी हाय में वर्णित इस्लाम, जब एक लाख चवालीस हजार के मुद्रांकन की अवधि समाप्त होगी, तब संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय फिर से अचानक और अप्रत्याशित रूप से प्रहार करेगा। उस अवधि का प्रतिरूप पहली हाय की आरंभिक अवधि और दूसरी हाय की अंतिम अवधि द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

और सारा ने मिस्री हागर के उस पुत्र को, जिसे उसने अब्राहम के लिए जन्माया था, उपहास करते देखा। तब उसने अब्राहम से कहा, इस दासी और उसके पुत्र को निकाल दे; क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र, अर्थात् इसहाक, के साथ वारिस न होगा। और यह बात उसके पुत्र के कारण अब्राहम को बहुत बुरी लगी। परन्तु परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, लड़के और दासी के कारण तुझे बुरा न लगे; जो कुछ सारा ने तुझसे कहा है, उसकी बात मान; क्योंकि इसहाक से ही तेरी संतान कहलाएगी। और दासी के पुत्र से भी मैं एक जाति बनाऊँगा, क्योंकि वह तेरी संतान है। तब अब्राहम भोर को उठकर रोटी और पानी की मशक लेकर हागर को दी; मशक उसके कंधे पर रख दी, और लड़के को भी उसके साथ भेज दिया; और उसे विदा किया। वह चली गई और बेशेबा के जंगल में भटकती रही। जब मशक का पानी चुक गया, तो उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे लिटा दिया। और वह जाकर उससे कुछ दूर, जितनी दूरी धनुष के तीर की होती है, उसके सामने बैठ गई; क्योंकि वह कहती थी, मैं लड़के की मृत्यु न देखूँ। और वह उसके सामने बैठ गई, और आवाज़ ऊँची करके रोई। और परमेश्वर ने उस लड़के की आवाज़ सुनी; और परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग से हागर को पुकारकर कहा, हागर, तुझे क्या हुआ है? मत डर; क्योंकि जहाँ वह है वहीं परमेश्वर ने उस लड़के की आवाज़ सुन ली है। उठ, लड़के को उठा, और उसे अपने हाथ से थाम; क्योंकि मैं उससे एक बड़ी जाति बनाऊँगा। तब परमेश्वर ने उसकी आँखें खोल दीं, और उसे एक जल का कुआँ दिखाई दिया; वह गई, पानी से मशक भर लाई, और लड़के को पानी पिलाया। और परमेश्वर उस लड़के के साथ था; वह बड़ा हुआ, जंगल में रहने लगा, और धनुर्धर बन गया। उत्पत्ति 21:9-20.